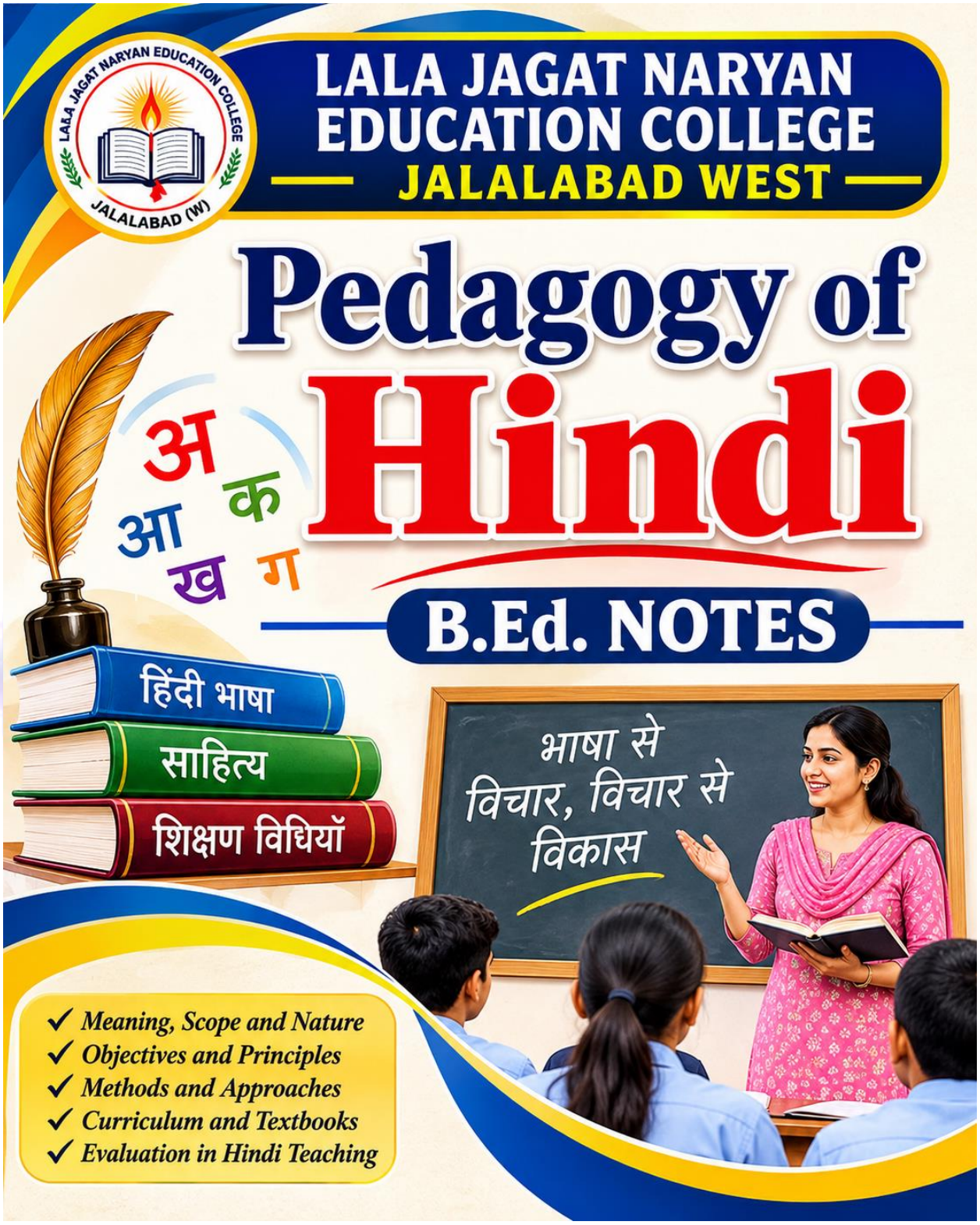


हिंदी भाषा एवं शिक्षण – पाठ्यक्रम

इकाई – I : भाषा का स्वरूप

(क) भाषा का अर्थ, आधार, प्रकृति एवं हिंदी भाषा की उत्पत्ति तथा विकास।

कुल अंक : 50

- **बाह्य सैद्धांतिक परीक्षा : 40 अंक**
- **आंतरिक प्रायोगिक परीक्षा : 10 अंक**

(ख) देवनागरी लिपि की विशेषताएँ एवं सीमाएँ तथा हिंदी भाषा का महत्व मातृभाषा, राष्ट्रभाषा एवं अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में।

(ग) हिंदी शिक्षण – उद्देश्य, सामान्य सिद्धांत एवं सूत्र।

इकाई – II : भाषाई कौशल

(क) श्रवण कौशल विकसित करने की विधियाँ, बातचीत के गुण, अशुद्ध उच्चारण के कारण एवं निवारण।

(ख) पठन कौशल की विधियाँ एवं प्रकार (सूक्ष्म एवं स्थूल)। सस्वर पाठ एवं मौन पाठ का महत्व।

(ग) लेखन कौशल का महत्व, अवस्थाएँ, अशुद्धियों के कारण एवं निवारण।

हिंदी भाषा एवं शिक्षण (Pedagogy of Hindi)

नीचे दोनों इकाइयों के सभी विषयों को सरल हिंदी भाषा में विस्तारपूर्वक समझाया गया है। प्रत्येक विषय में परिभाषा, विशेषताएँ, महत्व, उदाहरण और परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण बिंदु दिए गए हैं।

इकाई – I : भाषा का स्वरूप

(क) भाषा का अर्थ, आधार, प्रकृति एवं हिंदी भाषा की उत्पत्ति तथा विकास

1. भाषा का अर्थ (Meaning of Language)

भाषा मनुष्य के विचारों, भावनाओं, इच्छाओं और अनुभवों को व्यक्त करने का एक महत्वपूर्ण साधन है। भाषा के माध्यम से मनुष्य दूसरे व्यक्तियों के साथ अपने विचारों का आदान-प्रदान करता है।

सरल शब्दों में: भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा हम बोलकर, लिखकर या संकेतों के माध्यम से अपने विचार दूसरों तक पहुँचाते हैं।

उदाहरण:

- शिक्षक का विद्यार्थियों को पढ़ाना।
- बच्चों का आपस में बातचीत करना।
- पत्र लिखकर अपने विचार व्यक्त करना।
- संकेतों के माध्यम से अपनी बात समझाना।

भाषा की प्रमुख परिभाषाएँ

1. प्लेटो के अनुसार: विचारों को ध्वनि के माध्यम से व्यक्त करना भाषा है।
2. स्वीट के अनुसार: भाषा विचारों को व्यक्त करने का साधन है।
3. सामान्य अर्थ में: भाषा सामाजिक जीवन में संचार और अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम है।

2. भाषा का आधार (Basis of Language)

भाषा का आधार मुख्य रूप से निम्नलिखित तत्वों पर निर्भर करता है।

1. ध्वनि (Sound): भाषा का मूल आधार ध्वनि है। मनुष्य बोलकर अपनी बात व्यक्त करता है।

उदाहरण: क, ख, ग, म, प।

2. शब्द (Words): ध्वनियों के सार्थक समूह से शब्द बनते हैं।

उदाहरण: कमल, पुस्तक, विद्यालय।

3. वाक्य (Sentence): शब्दों के व्यवस्थित समूह से वाक्य बनता है।

उदाहरण: राम विद्यालय जाता है।

4. व्याकरण (Grammar): व्याकरण भाषा को शुद्ध रूप से बोलने और लिखने के नियम बताता है।

5. सामाजिक वातावरण: भाषा का विकास समाज और सामाजिक संपर्क के माध्यम से होता है।

3. भाषा की प्रकृति (Nature of Language)

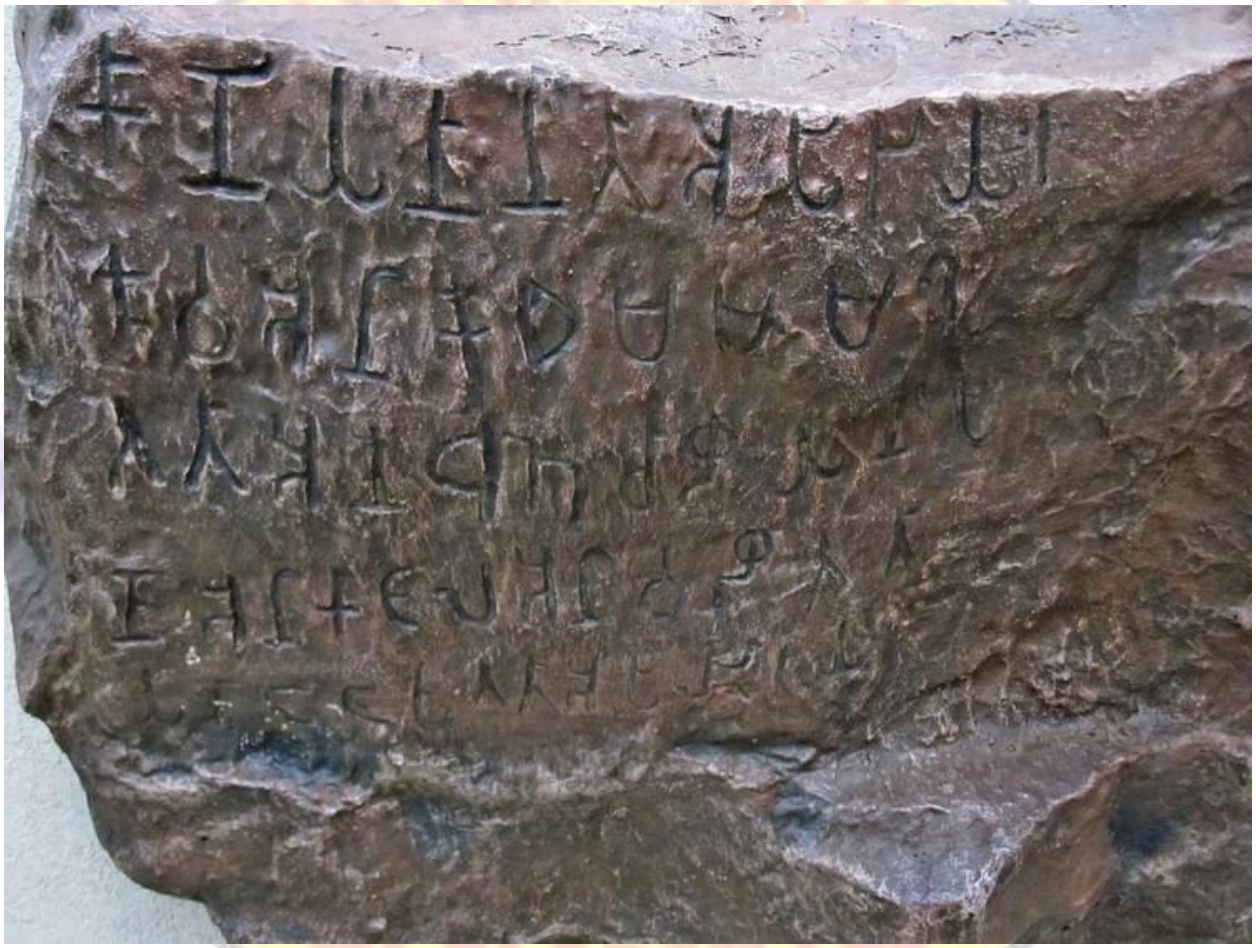
भाषा की प्रकृति को निम्नलिखित विशेषताओं से समझा जा सकता है।

1. **भाषा सामाजिक है: भाषा का जन्म और विकास समाज में होता है।**
2. **भाषा अर्जित होती है: बच्चा अपने परिवार और वातावरण से भाषा सीखता है।**
3. **भाषा परिवर्तनशील है: समय के साथ भाषा में नए शब्द जुड़ते रहते हैं।**
4. **भाषा प्रतीकात्मक है: भाषा में शब्द वस्तुओं और विचारों के प्रतीक होते हैं।**
5. **भाषा नियमबद्ध है: प्रत्येक भाषा के अपने व्याकरणिक नियम होते हैं।**
6. **भाषा संप्रेषण का साधन है: भाषा द्वारा विचारों का आदान-प्रदान होता है।**
7. **भाषा संस्कृति की वाहक है: भाषा के माध्यम से समाज की परंपराएँ और संस्कृति सुरक्षित रहती हैं।**
8. **भाषा सृजनात्मक है: मनुष्य भाषा की सहायता से नए वाक्य और विचार बना सकता है।**

4. हिंदी भाषा की उत्पत्ति (Origin of Hindi Language)

हिंदी भाषा भारतीय आर्य भाषा परिवार की प्रमुख भाषा है। इसकी उत्पत्ति संस्कृत से विकसित हुई प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं की परंपरा से मानी जाती है।

हिंदी का विकास एक लंबी ऐतिहासिक प्रक्रिया के माध्यम से हुआ।



हिंदी भाषा के विकास की प्रमुख अवस्थाएँ:

1. **वैदिक संस्कृत: प्राचीन भारतीय भाषा, जिसमें वेदों की रचना हुई।**
2. **लौकिक संस्कृत: संस्कृत का विकसित साहित्यिक रूप।**

3. प्राकृत भाषा: संस्कृत से संबंधित जनसामान्य की बोलचाल की भाषाएँ।
4. अपभ्रंश भाषा: प्राकृत भाषाओं के बाद विकसित भाषाई रूप।
5. प्रारंभिक हिंदी: अपभ्रंश से विकसित विभिन्न क्षेत्रीय हिंदी रूप।
6. आधुनिक हिंदी: आधुनिक काल में खड़ी बोली आधारित मानक हिंदी का विकास हुआ।

हिंदी भाषा का विकास – Mind Map

भारतीय आर्य भाषा परंपरा

वैदिक संस्कृत

लौकिक संस्कृत

प्राकृत

अपभ्रंश

प्रारंभिक हिंदी

आधुनिक हिंदी

5. हिंदी भाषा का विकास (Development of Hindi Language)

हिंदी भाषा के विकास को सामान्यतः तीन कालों में समझा जा सकता है।

1. आदिकाल (लगभग 1000–1350 ई.)

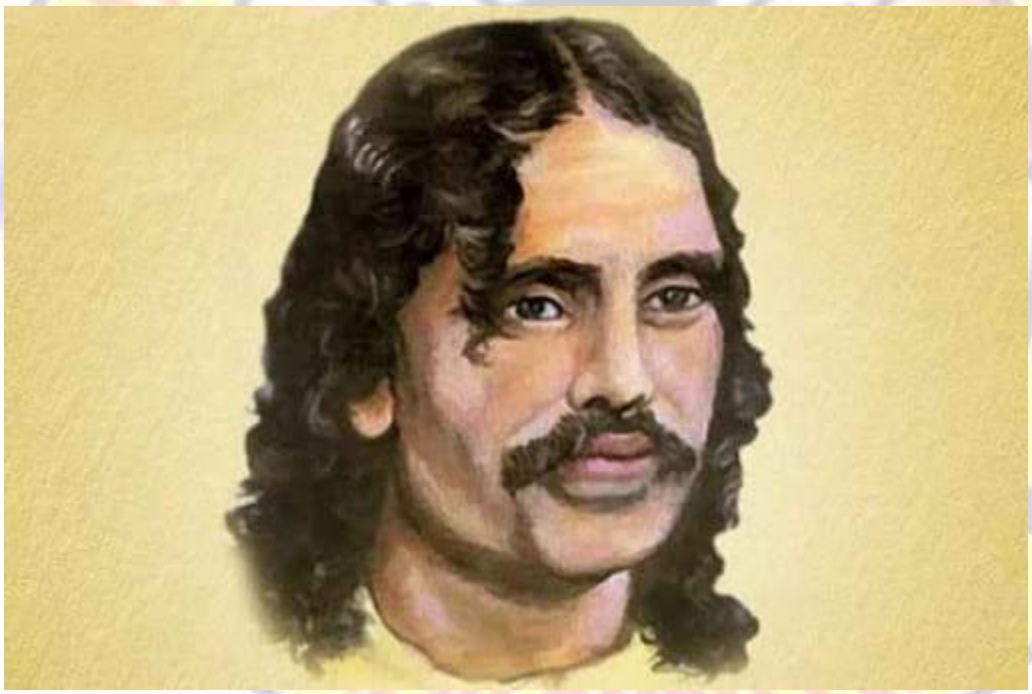
- हिंदी भाषा के प्रारंभिक रूप का विकास हुआ।
- वीरगाथात्मक साहित्य की रचना हुई।
- पृथ्वीराज रासो जैसे ग्रंथों का उल्लेख किया जाता है।

2. मध्यकाल (लगभग 1350–1850 ई.)

- भक्ति और रीति साहित्य का विकास हुआ।
- अवधी और ब्रजभाषा का विशेष महत्व रहा।
- तुलसीदास, सूरदास, कबीरदास और बिहारी प्रमुख साहित्यकार थे।

3. आधुनिक काल (लगभग 1850 ई. से वर्तमान तक)

- खड़ी बोली हिंदी का विकास हुआ।
- हिंदी पत्रकारिता और आधुनिक गद्य का विकास हुआ।
- भारतेंदु हरिश्चंद्र को आधुनिक हिंदी साहित्य का जनक कहा जाता है।
- महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी भाषा और साहित्य को विकसित किया।
- प्रेमचंद ने हिंदी कहानी और उपन्यास को समृद्ध बनाया।



उदाहरण: आज विद्यालयों में पढ़ाई जाने वाली मानक हिंदी मुख्यतः खड़ी बोली पर आधारित है।

(ख) देवनागरी लिपि की विशेषताएँ एवं सीमाएँ तथा हिंदी भाषा का महत्व

1. देवनागरी लिपि का अर्थ

देवनागरी हिंदी भाषा को लिखने की प्रमुख लिपि है। इसका प्रयोग संस्कृत, हिंदी, मराठी और नेपाली जैसी भाषाओं को लिखने में भी किया जाता है।



2. देवनागरी लिपि की विशेषताएँ

1. वैज्ञानिक लिपि: इसमें ध्वनि और वर्ण के बीच सामान्यतः स्पष्ट संबंध होता है।
2. बाएँ से दाएँ लेखन: देवनागरी लिपि बाईं ओर से दाईं ओर लिखी जाती है।
3. शिरोरेखा: अधिकांश अक्षरों के ऊपर एक रेखा होती है।
4. स्वर और व्यंजन: इसमें स्वर तथा व्यंजन अलग-अलग होते हैं।

5. उच्चारण की सुविधा: वर्णों का उच्चारण सामान्यतः निश्चित होता है।
6. संयुक्त अक्षर: इसमें क्ष, त्र, ज्ञ, श्र जैसे संयुक्त अक्षर पाए जाते हैं।
7. मात्राओं का प्रयोग: स्वर ध्वनियों को व्यक्त करने के लिए मात्राओं का प्रयोग होता है।
8. व्यवस्थित वर्णमाला: वर्णों को उच्चारण स्थान और प्रयत्न के आधार पर व्यवस्थित किया गया है।

3. देवनागरी लिपि की सीमाएँ

1. कुछ शब्दों के उच्चारण और लेखन में अंतर पाया जाता है।
2. संयुक्त अक्षरों को सीखना प्रारंभिक विद्यार्थियों के लिए कठिन हो सकता है।
3. अनुस्वार और अनुनासिक के प्रयोग में भ्रम हो सकता है।
4. कुछ विदेशी ध्वनियों को व्यक्त करने के लिए अतिरिक्त चिह्नों का प्रयोग करना पड़ता है।
5. शुद्ध वर्तनी सीखने के लिए नियमित अभ्यास आवश्यक है।
6. कंप्यूटर और डिजिटल माध्यमों में पुराने फॉन्टों के कारण कभी-कभी समस्या आती थी, हालाँकि यूनिकोड ने इसे काफी आसान बना दिया है।

4. हिंदी भाषा का महत्व

A. मातृभाषा के रूप में महत्व

मातृभाषा वह भाषा है जिसे बच्चा अपने परिवार और आसपास के वातावरण से सबसे पहले सीखता है।

महत्व:

- बच्चे के मानसिक विकास में सहायता करती है।
- विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में मदद करती है।
- शिक्षा को सरल और प्रभावशाली बनाती है।

- संस्कृति और परंपराओं से जोड़ती है।
- आत्मविश्वास का विकास करती है।

उदाहरण: यदि पंजाब में रहने वाला बच्चा घर में पंजाबी बोलता है, तो पंजाबी उसकी मातृभाषा हो सकती है। हिंदी वह विद्यालय में दूसरी भाषा के रूप में सीख सकता है।

B. राष्ट्रीय भाषा के रूप में महत्व

भारत के संविधान ने हिंदी को देवनागरी लिपि में संघ की राजभाषा का दर्जा दिया है। अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी है।

- हिंदी भारत के अनेक क्षेत्रों में संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग होती है।
- सरकारी और प्रशासनिक कार्यों में इसका प्रयोग होता है।
- हिंदी साहित्य भारतीय संस्कृति को समृद्ध बनाता है।
- देश के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच संवाद में सहायता करती है।

महत्वपूर्ण: हिंदी को संविधान द्वारा भारत की राष्ट्रभाषा घोषित नहीं किया गया है। इसे संघ की राजभाषा कहा जाता है।

C. अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में महत्व

- हिंदी विश्व के अनेक देशों में बोली और समझी जाती है।
- विदेशों में हिंदी शिक्षण संस्थान और विश्वविद्यालय मौजूद हैं।
- हिंदी फिल्मों, संगीत और साहित्य के कारण इसका प्रचार हुआ है।
- प्रवासी भारतीय हिंदी के प्रसार में योगदान देते हैं।
- डिजिटल मीडिया और इंटरनेट पर हिंदी का प्रयोग लगातार बढ़ रहा है।



(ग) हिंदी शिक्षण – उद्देश्य, सामान्य सिद्धांत एवं सूत्र

1. हिंदी शिक्षण का अर्थ

हिंदी शिक्षण एक ऐसी शैक्षिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से विद्यार्थियों को हिंदी भाषा का ज्ञान, समझ, शुद्ध उच्चारण, पढ़ने, लिखने और विचार व्यक्त करने की क्षमता प्रदान की जाती है।

2. हिंदी शिक्षण के उद्देश्य (Objectives of Teaching Hindi)

1. भाषा का ज्ञान: विद्यार्थियों को हिंदी भाषा का ज्ञान देना।
2. श्रवण कौशल: ध्यानपूर्वक सुनने की क्षमता विकसित करना।
3. बोलने का कौशल: शुद्ध उच्चारण और प्रभावशाली बोलने की क्षमता विकसित करना।
4. पठन कौशल: शुद्ध एवं उचित गति से पढ़ना सिखाना।

5. लेखन कौशल: शुद्ध वर्तनी और व्याकरण के साथ लिखना सिखाना।
6. शब्द भंडार: नए शब्दों का ज्ञान बढ़ाना।
7. साहित्यिक रुचि: कविता, कहानी और नाटक पढ़ने में रुचि पैदा करना।
8. रचनात्मकता: मौलिक विचारों को व्यक्त करने की क्षमता विकसित करना।
9. नैतिक विकास: साहित्य के माध्यम से अच्छे संस्कार विकसित करना।
10. सामाजिक विकास: दूसरों के साथ प्रभावी संवाद करना सिखाना।

3. हिंदी शिक्षण के सामान्य सिद्धांत

सिद्धांत	अर्थ	उदाहरण
ज्ञात से अज्ञात	पहले परिचित ज्ञान देना	घर से विद्यालय
सरल से कठिन	आसान विषय से कठिन विषय	शब्द से वाक्य
स्थूल से सूक्ष्म	सामान्य जानकारी से बारीक जानकारी	कहानी से व्याकरण
मूर्त से अमूर्त	वस्तु से विचार की ओर	फूल से सुंदरता
विशेष से सामान्य	उदाहरण से नियम बताना	कई संज्ञाओं से संज्ञा की परिभाषा
मनोवैज्ञानिक सिद्धांत	बालक की रुचि के अनुसार शिक्षण	चित्रों से पढ़ाना
अभ्यास का सिद्धांत	बार-बार अभ्यास कराना	शब्दों का लेखन
क्रियाशीलता का सिद्धांत	विद्यार्थियों को सक्रिय रखना	समूह चर्चा

4. हिंदी शिक्षण के सूत्र (Maxims of Teaching)

शिक्षण के सूत्र वे सामान्य नियम हैं जिनकी सहायता से शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया को सरल और प्रभावशाली बनाता है।

- **ज्ञात से अज्ञात की ओर।**
- **सरल से कठिन की ओर।**
- **स्थूल से सूक्ष्म की ओर।**
- **विशेष से सामान्य की ओर।**
- **पूर्ण से अंश की ओर।**
- **अनुभव से तर्क की ओर।**
- **अनिश्चित से निश्चित की ओर।**
- **प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर।**
- **मनोवैज्ञानिक से तार्किक की ओर।**

उदाहरण: यदि शिक्षक संज्ञा पढ़ाना चाहता है, तो पहले राम, सीता, दिल्ली, पुस्तक जैसे उदाहरण देगा। इसके बाद संज्ञा की परिभाषा बताएगा। यह विशेष से सामान्य का सिद्धांत है।

इकाई – II : भाषाई कौशल

भाषा सीखने के लिए चार प्रमुख कौशल आवश्यक हैं।

चार प्रमुख भाषाई कौशल – Mind Map

भाषाई कौशल

श्रवण कौशल

सुनना (Listening)

बोलने का कौशल

बोलना (Speaking)

पठन कौशल

पढ़ना (Reading)

लेखन कौशल

लिखना (Writing)

(क) श्रवण कौशल विकसित करने की विधियाँ, बातचीत के गुण, अशुद्ध उच्चारण के कारण एवं निवारण

1. श्रवण कौशल का अर्थ (Listening Skill)

श्रवण कौशल का अर्थ है किसी व्यक्ति की बात को ध्यानपूर्वक सुनना, समझना और उसके अर्थ को ग्रहण करना।

यह भाषा सीखने का पहला महत्वपूर्ण कौशल है।

उदाहरण: शिक्षक कहानी सुनाता है और विद्यार्थी ध्यान से सुनकर कहानी से संबंधित प्रश्नों के उत्तर देते हैं।



2. श्रवण कौशल का महत्व

1. **भाषा सीखने में सहायता करता है।**
2. **शब्दों का सही उच्चारण सीखने में मदद करता है।**
3. **एकाग्रता और ध्यान शक्ति बढ़ाता है।**
4. **दूसरों की बात समझने की क्षमता विकसित करता है।**
5. **भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करता है।**
6. **संवाद करने की क्षमता बढ़ाता है।**
7. **ज्ञान और जानकारी प्राप्त करने में मदद करता है।**

3. श्रवण कौशल विकसित करने की विधियाँ

1. कहानी सुनाना: शिक्षक बच्चों को रोचक कहानियाँ सुनाए और प्रश्न पूछे।

2. कविता सुनाना: विद्यार्थियों को कविता सुनाकर उसका अर्थ समझाया जाए।

3. श्रुतलेख: शिक्षक शब्द या वाक्य बोले और विद्यार्थी उन्हें लिखें।

4. ऑडियो सुनाना: रिकॉर्ड की गई कहानियाँ, भाषण और समाचार सुनाए जाएँ।

5. प्रश्नोत्तर विधि: शिक्षक प्रश्न पूछे और विद्यार्थी ध्यानपूर्वक सुनकर उत्तर दें।

6. समूह चर्चा: विद्यार्थियों को अलग-अलग विषयों पर चर्चा करने का अवसर दिया जाए।

7. निर्देश सुनना: शिक्षक निर्देश दे और विद्यार्थी उनका पालन करें।



4. बातचीत के गुण (Qualities of Good Conversation)

अच्छी बातचीत के निम्नलिखित गुण होते हैं:

1. **स्पष्टता: बातचीत स्पष्ट और आसानी से समझ आने वाली होनी चाहिए।**
2. **शुद्ध उच्चारण: शब्दों का उच्चारण सही होना चाहिए।**
3. **सरलता: भाषा सरल और सहज होनी चाहिए।**
4. **मधुरता: बातचीत में विनम्रता और मधुरता होनी चाहिए।**
5. **आत्मविश्वास: बोलते समय आत्मविश्वास होना चाहिए।**
6. **संक्षिप्तता: अनावश्यक बातें नहीं करनी चाहिए।**
7. **शिष्टाचार: दूसरों की भावनाओं का सम्मान करना चाहिए।**
8. **धैर्य: दूसरे व्यक्ति की बात ध्यानपूर्वक सुननी चाहिए।**
9. **प्रासंगिकता: बातचीत विषय के अनुसार होनी चाहिए।**

उदाहरण:

अच्छी बातचीत:

शिक्षक: तुम्हें कौन-सा विषय पसंद है?

विद्यार्थी: मुझे हिंदी विषय पसंद है क्योंकि इसमें कहानियाँ और कविताएँ पढ़ने को मिलती हैं।

5. अशुद्ध उच्चारण के कारण (Causes of Incorrect Pronunciation)

1. **मातृभाषा का प्रभाव।**
2. **गलत उच्चारण सुनने की आदत।**
3. **ध्वनियों का सही ज्ञान न होना।**
4. **अभ्यास की कमी।**
5. **क्षेत्रीय भाषा का प्रभाव।**
6. **शिक्षक द्वारा गलत उच्चारण।**
7. **कठिन शब्दों का सही ज्ञान न होना।**

8. आत्मविश्वास की कमी।

6. अशुद्ध उच्चारण का निवारण (Remedies)

1. शिक्षक स्वयं शुद्ध उच्चारण करे।
2. विद्यार्थियों को नियमित बोलने का अभ्यास करवाए।
3. कठिन शब्दों का बार-बार उच्चारण करवाए।
4. ऑडियो और वीडियो का प्रयोग करे।
5. कविता और कहानी का वाचन करवाए।
6. शब्दकोश का प्रयोग सिखाए।
7. व्यक्तिगत गलतियों को पहचानकर सुधार करवाए।
8. विद्यार्थियों को बोलने के पर्याप्त अवसर दे।

उदाहरण: यदि विद्यार्थी 'विद्यालय' शब्द का गलत उच्चारण करता है, तो शिक्षक सही उच्चारण करके उसे धीरे-धीरे दोहराने का अवसर देगा।

(ख) पठन कौशल की विधियाँ एवं प्रकार (सूक्ष्म एवं स्थूल)। सस्वर पाठ एवं मौन पाठ का महत्व

1. पठन कौशल का अर्थ (Reading Skill)

पठन कौशल का अर्थ है लिखित शब्दों, वाक्यों और अनुच्छेदों को पढ़कर उनका सही अर्थ समझने की क्षमता।

पठन के माध्यम से विद्यार्थी ज्ञान, जानकारी और अनुभव प्राप्त करते हैं।



2. पठन कौशल का महत्व

1. **ज्ञान में वृद्धि करता है।**
2. **शब्द भंडार बढ़ाता है।**
3. **भाषा का सही ज्ञान देता है।**
4. **कल्पना शक्ति का विकास करता है।**
5. **एकाग्रता बढ़ाता है।**
6. **साहित्य के प्रति रुचि पैदा करता है।**
7. **स्वतंत्र अध्ययन की आदत विकसित करता है।**
8. **परीक्षा की तैयारी में सहायता करता है।**

3. पठन कौशल की विधियाँ

1. आदर्श वाचन विधि: शिक्षक स्वयं शुद्ध उच्चारण और उचित भाव के साथ पाठ पढ़ता है।

2. अनुकरण वाचन विधि: विद्यार्थी शिक्षक के पढ़ने के बाद उसी प्रकार पढ़ते हैं।

3. सामूहिक वाचन विधि: सभी विद्यार्थी मिलकर पाठ पढ़ते हैं।

4. व्यक्तिगत वाचन विधि: प्रत्येक विद्यार्थी को अलग-अलग पढ़ने का अवसर दिया जाता है।

5. प्रश्नोत्तर विधि: पाठ पढ़ने के बाद उससे संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं।

6. मौन पठन विधि: विद्यार्थी बिना आवाज किए स्वयं पाठ पढ़ते हैं।

4. पठन के प्रकार

पठन के दो महत्वपूर्ण प्रकार हैं:

A. सूक्ष्म पठन (Intensive Reading)

सूक्ष्म पठन में किसी पाठ को ध्यानपूर्वक और गहराई से पढ़ा जाता है। इसका उद्देश्य पाठ के प्रत्येक महत्वपूर्ण शब्द, वाक्य और विचार को समझना होता है।

विशेषताएँ:

- **पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़ना।**
- **कठिन शब्दों के अर्थ समझना।**
- **व्याकरणिक नियमों का ज्ञान प्राप्त करना।**
- **पाठ के मुख्य विचार को समझना।**
- **छोटे-छोटे भागों का विश्लेषण करना।**

उदाहरण: हिंदी की पाठ्यपुस्तक में दिए गए एक अनुच्छेद को पढ़कर उसके कठिन शब्दों, भावार्थ और प्रश्नों को समझना।

B. स्थूल पठन (Extensive Reading)

स्थूल पठन में अधिक मात्रा में सामग्री पढ़ी जाती है। इसका मुख्य उद्देश्य आनंद, सामान्य ज्ञान और व्यापक जानकारी प्राप्त करना होता है।

विशेषताएँ:

- **अधिक सामग्री पढ़ना।**
- **पढ़ने की आदत विकसित करना।**
- **सामान्य अर्थ समझना।**
- **पढ़ने की गति बढ़ाना।**
- **साहित्य में रुचि पैदा करना।**

उदाहरण: कहानी की पुस्तक, उपन्यास, समाचार पत्र और पत्रिकाएँ पढ़ना।



सूक्ष्म पठन

गहराई से पढ़ना



स्थूल पठन

अधिक मात्रा में पढ़ना

5. सस्वर पाठ (Loud Reading)

सस्वर पाठ का अर्थ है किसी लिखित सामग्री को आवाज के साथ स्पष्ट रूप से पढ़ना।

उदाहरण: विद्यार्थी कक्षा में हिंदी की कविता को आवाज के साथ पढ़ता है।

सस्वर पाठ का महत्व:

1. **उच्चारण शुद्ध होता है।**
2. **बोलने का आत्मविश्वास बढ़ता है।**

3. आवाज में उतार-चढ़ाव का ज्ञान होता है।
4. विराम चिह्नों का सही प्रयोग सीखते हैं।
5. भाषा की अभिव्यक्ति क्षमता विकसित होती है।
6. सुनने और बोलने का अभ्यास होता है।

6. मौन पाठ (Silent Reading)

मौन पाठ का अर्थ है बिना आवाज किए मन ही मन पढ़ना और पढ़ी गई सामग्री का अर्थ समझना।

उदाहरण: विद्यार्थी पुस्तकालय में बैठकर मन ही मन कहानी पढ़ता है।

मौन पाठ का महत्व:

1. पढ़ने की गति बढ़ती है।
2. एकाग्रता विकसित होती है।
3. स्वतंत्र अध्ययन की आदत बनती है।
4. समय की बचत होती है।
5. विषय को समझने की क्षमता बढ़ती है।
6. आत्मनिर्भरता का विकास होता है।

सस्वर पाठ और मौन पाठ में अंतर

सस्वर पाठ	मौन पाठ
आवाज के साथ पढ़ना	बिना आवाज पढ़ना
उच्चारण पर जोर	अर्थ समझने पर जोर
बोलने का अभ्यास	मानसिक एकाग्रता
सामूहिक कक्षा में उपयोगी	व्यक्तिगत अध्ययन में उपयोगी
प्रारंभिक कक्षाओं में अधिक उपयोगी	उच्च कक्षाओं में अधिक उपयोगी

(ग) लेखन कौशल का महत्व, अवस्थाएँ, अशुद्धियों के कारण एवं निवारण

1. लेखन कौशल का अर्थ (Writing Skill)

लेखन कौशल का अर्थ है अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को लिखित रूप में स्पष्ट, शुद्ध और व्यवस्थित ढंग से व्यक्त करने की क्षमता।

उदाहरण:

- **पत्र लिखना।**
- **निबंध लिखना।**
- **कहानी लिखना।**
- **आवेदन पत्र लिखना।**
- **प्रश्नों के उत्तर लिखना।**



2. लेखन कौशल का महत्व

1. **विचारों को लिखित रूप में व्यक्त करना सिखाता है।**
2. **भाषा को शुद्ध और व्यवस्थित बनाता है।**

3. स्मरण शक्ति का विकास करता है।
4. रचनात्मकता को बढ़ावा देता है।
5. व्याकरण और वर्तनी का ज्ञान बढ़ाता है।
6. परीक्षा में अच्छे उत्तर लिखने में सहायता करता है।
7. आत्मविश्वास विकसित करता है।
8. ज्ञान को लंबे समय तक सुरक्षित रखने में मदद करता है।
9. संचार का स्थायी माध्यम प्रदान करता है।

3. लेखन कौशल की अवस्थाएँ (Stages of Writing Skill)

1. पूर्व-लेखन अवस्था (Pre-Writing Stage)

इस अवस्था में विद्यार्थी को लिखने के लिए तैयार किया जाता है।

- पेंसिल पकड़ना सीखना।
- रेखाएँ और आकृतियाँ बनाना।
- चित्रों को पहचानना।
- अक्षरों का ज्ञान प्राप्त करना।

2. प्रारंभिक लेखन अवस्था (Beginning Writing Stage)

इस अवस्था में विद्यार्थी अक्षर और छोटे शब्द लिखना सीखता है।

उदाहरण: अ, आ, इ, क, ख, ग।

3. शब्द एवं वाक्य लेखन अवस्था

इस अवस्था में विद्यार्थी शब्दों और छोटे-छोटे वाक्यों का निर्माण करता है।

उदाहरण: राम खेलता है।

4. अनुच्छेद लेखन अवस्था

इस अवस्था में विद्यार्थी किसी विषय पर छोटे अनुच्छेद लिखता है।

उदाहरण: मेरा विद्यालय।

5. रचनात्मक लेखन अवस्था

इस अवस्था में विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से निबंध, कहानी, पत्र और कविता लिखता है।





4. लेखन में होने वाली अशुद्धियाँ

लेखन में अशुद्धियाँ मुख्यतः निम्न प्रकार की होती हैं:

1. वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ

शब्दों को गलत लिखना।

उदाहरण:

- **अशुद्ध: विधालय**
- **शुद्ध: विद्यालय**

2. व्याकरण संबंधी अशुद्धियाँ

वाक्य में व्याकरण के नियमों का गलत प्रयोग करना।

उदाहरण:

- **अशुद्ध: राम स्कूल जाती है।**
- **शुद्ध: राम स्कूल जाता है।**

3. मात्रा संबंधी अशुद्धियाँ

मात्राओं का गलत प्रयोग करना।

उदाहरण:

- **अशुद्ध: किताव**
- **शुद्ध: किताब**

4. विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियाँ

विराम चिह्नों का गलत प्रयोग करना।

उदाहरण:

- अशुद्ध: राम कहाँ जा रहा है।
- शुद्ध: राम कहाँ जा रहा है?

5. शब्द क्रम संबंधी अशुद्धियाँ

वाक्य में शब्दों को गलत क्रम में लिखना।

6. सुलेख संबंधी अशुद्धियाँ

अक्षरों को अस्पष्ट और असमान लिखना।

5. लेखन में अशुद्धियों के कारण

1. नियमित अभ्यास की कमी।
2. व्याकरण का पर्याप्त ज्ञान न होना।
3. गलत वर्तनी की आदत।
4. मातृभाषा का प्रभाव।
5. जल्दबाजी में लिखना।
6. शिक्षक द्वारा उचित मार्गदर्शन की कमी।
7. कठिन शब्दों का ज्ञान न होना।
8. अक्षरों और मात्राओं में भ्रम।
9. पढ़ने की आदत की कमी।

6. लेखन की अशुद्धियों का निवारण

1. विद्यार्थियों को नियमित लेखन अभ्यास करवाना।
2. प्रतिदिन श्रुतलेख करवाना।
3. शुद्ध वर्तनी का अभ्यास करवाना।
4. व्याकरण के नियम समझाना।
5. सुलेख का अभ्यास करवाना।
6. गलतियों को पहचानकर सुधार करवाना।
7. शब्दकोश का प्रयोग सिखाना।
8. निबंध और पत्र लेखन का अभ्यास करवाना।

9. विद्यार्थियों को उचित प्रतिक्रिया और मार्गदर्शन देना।
10. सरल से कठिन लेखन की ओर बढ़ना।

उदाहरण: यदि विद्यार्थी बार-बार 'विद्यालय' शब्द गलत लिखता है, तो शिक्षक उसे शब्द का सही रूप दिखाएगा, शब्द का अभ्यास करवाएगा और फिर वाक्य में उसका प्रयोग करवाएगा।

महत्वपूर्ण Mind Maps – परीक्षा की तैयारी के लिए

1. हिंदी भाषा का संपूर्ण Mind Map

हिंदी भाषा

अर्थ

विचारों की अभिव्यक्ति

आधार

ध्वनि, शब्द, वाक्य, व्याकरण

प्रकृति

सामाजिक, परिवर्तनशील, अर्जित

उत्पत्ति

संस्कृत–प्राकृत–अपभ्रंश

विकास

आदिकाल, मध्यकाल, आधुनिक काल

महत्व

शिक्षा, संस्कृति, संचार

2. हिंदी शिक्षण का Mind Map

हिंदी शिक्षण

उद्देश्य

- भाषा ज्ञान
- शुद्ध उच्चारण
- पठन-लेखन
- रचनात्मकता

सिद्धांत

- ज्ञात से अज्ञात
- सरल से कठिन
- स्थूल से सूक्ष्म
- मूर्त से अमूर्त

3. भाषाई कौशल का Mind Map

भाषाई कौशल

श्रवण कौशल

सुनना, समझना, ध्यान देना

बोलने का कौशल

स्पष्ट बोलना, बातचीत, उच्चारण

पठन कौशल

सस्वर, मौन, सूक्ष्म, स्थूल पठन

लेखन कौशल

अक्षर, शब्द, वाक्य, अनुच्छेद, निबंध

4. लेखन कौशल का Mind Map

लेखन कौशल

महत्व

विचार अभिव्यक्ति, ज्ञान, रचनात्मकता

अवस्थाएँ

पूर्व लेखन, अक्षर, शब्द, वाक्य, रचना

अशुद्धियाँ

वर्तनी, मात्रा, व्याकरण, विराम चिह्न

निवारण

श्रुतलेख, अभ्यास, सुलेख, सुधार

परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न

इन प्रश्नों को विशेष रूप से तैयार करें:

1. **भाषा का अर्थ, आधार एवं प्रकृति विस्तार से समझाइए।**
2. **हिंदी भाषा की उत्पत्ति तथा विकास का वर्णन कीजिए।**
3. **देवनागरी लिपि की विशेषताओं एवं सीमाओं का वर्णन कीजिए।**
4. **मातृभाषा, राजभाषा एवं अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी का महत्व बताइए।**
5. **हिंदी शिक्षण के उद्देश्य एवं सामान्य सिद्धांत समझाइए।**
6. **श्रवण कौशल का अर्थ, महत्व एवं विकास की विधियाँ बताइए।**

7. अशुद्ध उच्चारण के कारण एवं निवारण के उपाय लिखिए।
8. सूक्ष्म एवं स्थूल पठन में अंतर स्पष्ट कीजिए।
9. सस्वर पाठ एवं मौन पाठ का महत्व बताइए।
10. लेखन कौशल का अर्थ, महत्व एवं विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन कीजिए।
11. लेखन संबंधी अशुद्धियों के कारण एवं निवारण समझाइए।

Quick Revision – एक नजर में

विषय	याद रखने योग्य मुख्य बिंदु
भाषा	विचारों की अभिव्यक्ति
भाषा का आधार	ध्वनि, शब्द, वाक्य
हिंदी की उत्पत्ति	संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश की परंपरा
देवनागरी	शिरोरेखा, स्वर, व्यंजन, मात्राएँ
हिंदी शिक्षण	उद्देश्य, सिद्धांत, सूत्र
श्रवण	सुनना और समझना
बोलना	स्पष्ट एवं शुद्ध अभिव्यक्ति
पठन	सूक्ष्म एवं स्थूल
सस्वर पाठ	आवाज के साथ पढ़ना
मौन पाठ	मन ही मन पढ़ना
लेखन	विचारों की लिखित अभिव्यक्ति

इकाई–III : पुस्तक एवं पाठ्यक्रम

(क) पाठ्य-पुस्तक का महत्व, विशेषताएँ एवं समीक्षा।

(ख) भाषा पुस्तकालय की उपयोगिता एवं व्यवस्था तथा छात्रों में पठन रुचि विकसित करने के उपाय।

(ग) पाठ्यक्रम – अर्थ, महत्व एवं निर्माण के सिद्धांत।

इकाई–IV : व्याकरण बोध

(क) वर्ण विचार – वर्णमाला, मात्राएँ, उच्चारण स्थान एवं प्राण तत्त्व।

(ख) शब्द भेद – अर्थ, उत्पत्ति एवं व्युत्पत्ति के आधार पर, विपरीतार्थक शब्द तथा वाक्यांश के लिए एक शब्द।

(ग) वाक्य – प्रकार, वाक्य परिवर्तन एवं विराम चिह्न।

हिंदी शिक्षण शास्त्र (Pedagogy of Hindi)

इकाई–III एवं इकाई–IV : विस्तृत अध्ययन, उदाहरण, चित्र एवं माइंड मैपिंग

यह अध्ययन सामग्री B.Ed. विद्यार्थियों के लिए सरल हिंदी भाषा में तैयार की गई है। इसमें प्रत्येक विषय का अर्थ, परिभाषा, महत्व, विशेषताएँ, प्रकार और उदाहरण दिए गए हैं।

इकाई–III : पुस्तक एवं पाठ्यक्रम

(क) पाठ्य-पुस्तक का महत्व, विशेषताएँ एवं समीक्षा



1. पाठ्य-पुस्तक का अर्थ (Meaning of Textbook)

पाठ्य-पुस्तक वह पुस्तक है जिसे विद्यालय या शिक्षण संस्थान में निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए तैयार किया जाता है। इसमें पाठ्यक्रम से संबंधित विषयों, कहानियों, कविताओं, निबंधों, व्याकरण तथा अभ्यास प्रश्नों को व्यवस्थित रूप से शामिल किया जाता है।

उदाहरण: हिंदी विषय की पाठ्य-पुस्तक में कबीर के दोहे, प्रेमचंद की कहानियाँ, कविताएँ, व्याकरण और लेखन अभ्यास शामिल हो सकते हैं।

2. पाठ्य-पुस्तक का महत्व (Importance of Textbook)

1. **ज्ञान प्रदान करना: पाठ्य-पुस्तक विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों का व्यवस्थित ज्ञान प्रदान करती है।**
2. **शिक्षण में सहायता: शिक्षक पाठ्य-पुस्तक की सहायता से अपने पाठ को सरलता से समझा सकता है।**
3. **भाषा विकास: इससे विद्यार्थियों के सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के कौशल का विकास होता है।**
4. **शब्द-भंडार में वृद्धि: नए शब्दों, मुहावरों और लोकोक्तियों का ज्ञान प्राप्त होता है।**
5. **स्वाध्याय की आदत: विद्यार्थी स्वयं पुस्तक पढ़कर ज्ञान प्राप्त करना सीखते हैं।**
6. **नैतिक विकास: अच्छी कहानियों और कविताओं से नैतिक मूल्यों का विकास होता है।**
7. **परीक्षा की तैयारी: पाठ्य-पुस्तक परीक्षा की तैयारी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।**
8. **रचनात्मकता का विकास: चित्रों, कहानियों और गतिविधियों से कल्पनाशक्ति विकसित होती है।**
9. **राष्ट्रीय एकता: पाठ्य-पुस्तक विद्यार्थियों में देशभक्ति, समानता और भाईचारे की भावना विकसित करती है।**

3. अच्छी पाठ्य-पुस्तक की विशेषताएँ (Characteristics of a Good Textbook)

1. **सरल भाषा: पुस्तक की भाषा सरल, स्पष्ट और विद्यार्थियों के स्तर के अनुसार होनी चाहिए।**
2. **पाठ्यक्रम के अनुसार: पुस्तक निर्धारित पाठ्यक्रम पर आधारित होनी चाहिए।**

3. उचित विषय-वस्तु: इसमें उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक सामग्री होनी चाहिए।
4. आकर्षक चित्र: विषय को समझाने के लिए उचित चित्र और उदाहरण होने चाहिए।
5. आयु के अनुसार: पुस्तक विद्यार्थियों की आयु, रुचि और मानसिक स्तर के अनुसार होनी चाहिए।
6. व्याकरण की शुद्धता: पुस्तक में वर्तनी, व्याकरण और भाषा संबंधी त्रुटियाँ नहीं होनी चाहिए।
7. अभ्यास प्रश्न: प्रत्येक पाठ के अंत में अभ्यास प्रश्न होने चाहिए।
8. नैतिक मूल्य: पुस्तक में सामाजिक और नैतिक मूल्यों को स्थान मिलना चाहिए।
9. रचनात्मक गतिविधियाँ: प्रश्नोत्तरी, चर्चा, कहानी लेखन और समूह कार्य शामिल होने चाहिए।
10. वैज्ञानिक दृष्टिकोण: पुस्तक में तथ्य सही और प्रमाणिक होने चाहिए।

4. पाठ्य-पुस्तक की समीक्षा (Review of Textbook)

पाठ्य-पुस्तक की समीक्षा का अर्थ है पुस्तक की विषय-वस्तु, भाषा, चित्रों, शिक्षण उपयोगिता तथा अन्य विशेषताओं का व्यवस्थित मूल्यांकन करना।

पाठ्य-पुस्तक की समीक्षा के मुख्य आधार:

आधार	समीक्षा में ध्यान देने योग्य बातें
बाहरी स्वरूप	कागज, छपाई, जिल्द और आकार
भाषा	सरलता, स्पष्टता और शुद्धता
विषय-वस्तु	पाठ्यक्रम के अनुसार सामग्री
चित्र	आकर्षक एवं विषय से संबंधित
अभ्यास	प्रश्न, गतिविधियाँ और परियोजनाएँ
शिक्षण उपयोगिता	विद्यार्थियों के लिए उपयोगी

मूल्य **नैतिकता, समानता और राष्ट्रीय एकता**

उदाहरण: यदि कक्षा 6 की हिंदी पुस्तक में सरल कहानियाँ, कविताएँ, सुंदर चित्र, व्याकरण और अभ्यास प्रश्न दिए गए हैं तथा भाषा विद्यार्थियों के स्तर के अनुसार है, तो उसे एक अच्छी पाठ्य-पुस्तक माना जा सकता है।

(ख) भाषा पुस्तकालय की उपयोगिता एवं व्यवस्था तथा छात्रों में पठन रुचि विकसित करने के उपाय



1. भाषा पुस्तकालय का अर्थ (Meaning of Language Library)

भाषा पुस्तकालय वह स्थान है जहाँ भाषा के ज्ञान और विकास के लिए विभिन्न प्रकार की पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ, समाचार-पत्र, कहानियाँ, कविताएँ, शब्दकोश, व्याकरण की पुस्तकें तथा अन्य अध्ययन सामग्री उपलब्ध होती है।

उदाहरण: हिंदी भाषा पुस्तकालय में प्रेमचंद की कहानियाँ, कबीर के दोहे, हिंदी व्याकरण, शब्दकोश और बाल साहित्य रखा जाता है।

2. भाषा पुस्तकालय की उपयोगिता (Importance of Language Library)

1. **पठन कौशल का विकास: विद्यार्थियों में पढ़ने की क्षमता विकसित होती है।**
2. **शब्दावली का विकास: नए शब्दों और उनके अर्थों का ज्ञान होता है।**
3. **भाषा ज्ञान: भाषा के शुद्ध उच्चारण और प्रयोग का ज्ञान मिलता है।**
4. **स्वाध्याय: विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से पढ़ना सीखते हैं।**
5. **कल्पनाशक्ति का विकास: कहानियाँ और साहित्य कल्पनाशक्ति को बढ़ाते हैं।**
6. **लेखन क्षमता: विभिन्न पुस्तकों को पढ़ने से लेखन कौशल बेहतर होता है।**
7. **सामान्य ज्ञान: समाचार-पत्र और पत्रिकाओं से वर्तमान घटनाओं का ज्ञान मिलता है।**
8. **मनोरंजन: पुस्तकालय ज्ञान के साथ-साथ मनोरंजन भी प्रदान करता है।**
9. **आत्मविश्वास: पढ़ने और चर्चा करने से विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ता है।**

3. भाषा पुस्तकालय की व्यवस्था (Organization of Language Library)



एक अच्छे भाषा पुस्तकालय की व्यवस्था निम्नलिखित प्रकार से होनी चाहिए:

1. **उचित स्थान: पुस्तकालय शांत, स्वच्छ और हवादार होना चाहिए।**
2. **पुस्तकों का चयन: विद्यार्थियों की आयु और कक्षा के अनुसार पुस्तकें रखनी चाहिए।**

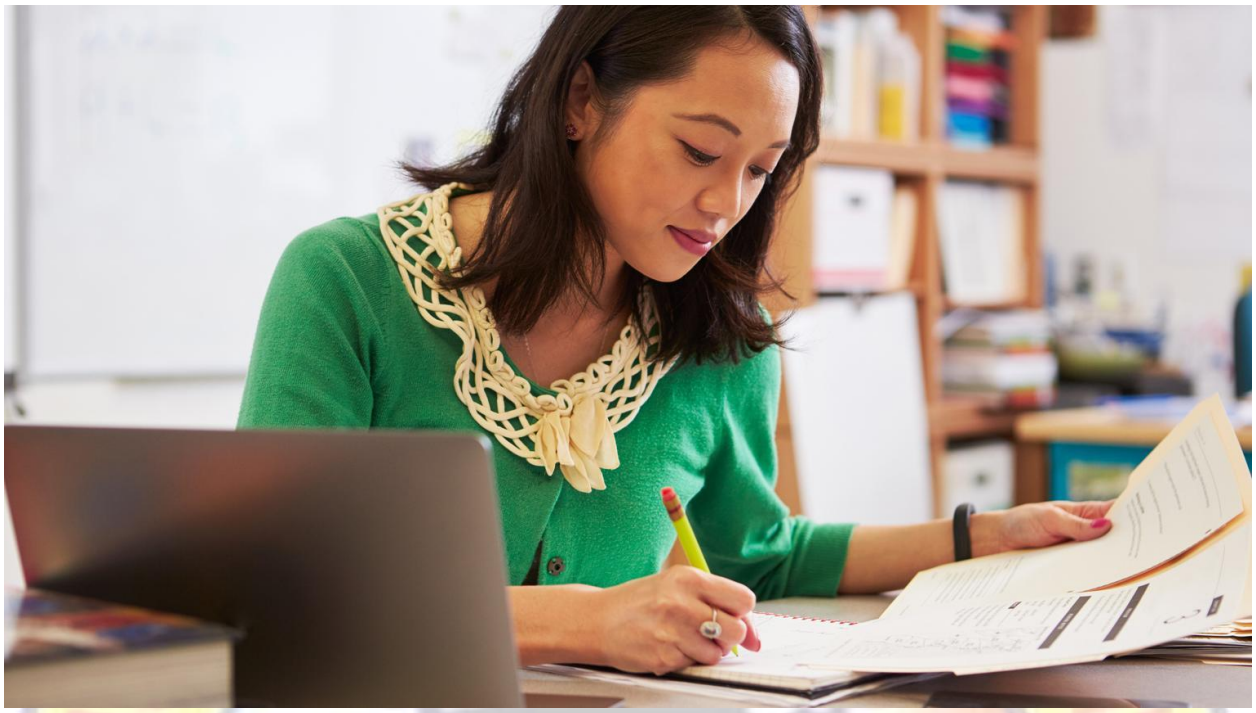
3. पुस्तकों का वर्गीकरण: कहानियाँ, कविताएँ, व्याकरण और साहित्य की पुस्तकें अलग-अलग रखनी चाहिए।
4. पुस्तक सूची: सभी पुस्तकों की सूची तैयार होनी चाहिए।
5. पुस्तक निर्गमन व्यवस्था: पुस्तकें देने और वापस लेने की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।
6. बैठने की सुविधा: विद्यार्थियों के लिए मेज और कुर्सियों की व्यवस्था होनी चाहिए।
7. समाचार-पत्र एवं पत्रिकाएँ: विभिन्न समाचार-पत्र और बाल पत्रिकाएँ उपलब्ध होनी चाहिए।
8. पुस्तकालयाध्यक्ष: पुस्तकालय का संचालन करने के लिए जिम्मेदार व्यक्ति होना चाहिए।
9. अनुशासन: पुस्तकालय में शांति और स्वच्छता बनाए रखनी चाहिए।

4. छात्रों में पठन रुचि विकसित करने के उपाय

1. विद्यार्थियों को रोचक कहानियाँ पढ़ने के लिए प्रेरित करना।
2. प्रतिदिन पुस्तक पढ़ने का समय निर्धारित करना।
3. कहानी सुनाने की प्रतियोगिताएँ आयोजित करना।
4. पुस्तक समीक्षा प्रतियोगिता करवाना।
5. कक्षा में पुस्तकालय कोना बनाना।
6. अच्छे पाठकों को पुरस्कार देना।
7. विद्यार्थियों को उनकी रुचि के अनुसार पुस्तकें देना।
8. समाचार-पत्र पढ़ने की आदत विकसित करना।
9. कविता पाठ और कहानी पाठ करवाना।
10. पुस्तक मेले और साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित करना।

उदाहरण: शिक्षक प्रत्येक शुक्रवार को विद्यार्थियों से एक कहानी पढ़ने और सोमवार को उस कहानी का सारांश अपनी भाषा में सुनाने के लिए कह सकता है। इससे पठन और बोलने की क्षमता विकसित होगी।

(ग) पाठ्यक्रम – अर्थ, महत्व एवं निर्माण के सिद्धांत



1. पाठ्यक्रम का अर्थ (Meaning of Curriculum)

पाठ्यक्रम वह संपूर्ण शैक्षिक योजना है जिसके अंतर्गत विद्यालय में विद्यार्थियों को प्रदान किए जाने वाले ज्ञान, अनुभवों, गतिविधियों, कौशलों और मूल्यों को शामिल किया जाता है।

सरल शब्दों में, पाठ्यक्रम यह निर्धारित करता है कि विद्यार्थियों को क्या पढ़ाया जाएगा, क्यों पढ़ाया जाएगा और किस प्रकार पढ़ाया जाएगा।

उदाहरण: हिंदी विषय के पाठ्यक्रम में गद्य, पद्य, व्याकरण, निबंध लेखन, पत्र लेखन, पठन और मौखिक अभिव्यक्ति शामिल हो सकते हैं।

2. पाठ्यक्रम का महत्व (Importance of Curriculum)

1. शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा करता है।
2. शिक्षण प्रक्रिया को व्यवस्थित बनाता है।
3. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायता करता है।
4. ज्ञान और कौशल का विकास करता है।

5. विद्यार्थियों में नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का विकास करता है।
6. शिक्षक को शिक्षण की योजना बनाने में सहायता करता है।
7. राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा प्रदान करता है।
8. विद्यार्थियों की रुचियों और क्षमताओं को विकसित करता है।
9. मूल्यांकन प्रक्रिया को सरल बनाता है।
10. जीवन की वास्तविक परिस्थितियों के लिए तैयार करता है।

3. पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धांत (Principles of Curriculum Construction)

1. बाल-केंद्रित सिद्धांत: पाठ्यक्रम विद्यार्थियों की आयु, रुचि, आवश्यकता और क्षमता के अनुसार होना चाहिए।

2. जीवन से संबंधित सिद्धांत: पाठ्यक्रम का संबंध वास्तविक जीवन से होना चाहिए।

3. उपयोगिता का सिद्धांत: पाठ्यक्रम में उपयोगी और व्यावहारिक ज्ञान शामिल होना चाहिए।

4. लचीलेपन का सिद्धांत: पाठ्यक्रम समय और परिस्थितियों के अनुसार बदलने योग्य होना चाहिए।

5. सामाजिक आवश्यकताओं का सिद्धांत: पाठ्यक्रम में समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखना चाहिए।

6. क्रियात्मकता का सिद्धांत: पाठ्यक्रम में गतिविधियों और प्रयोगों को महत्व देना चाहिए।

7. व्यक्तिगत भिन्नता का सिद्धांत: प्रत्येक विद्यार्थी की क्षमता और रुचि अलग होती है। पाठ्यक्रम में इसका ध्यान रखना चाहिए।

8. सहसंबंध का सिद्धांत: विभिन्न विषयों के बीच संबंध होना चाहिए।

9. निरंतरता का सिद्धांत: पाठ्यक्रम में सरल से कठिन और ज्ञात से अज्ञात की ओर बढ़ना चाहिए।

10. राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मूल्यों का सिद्धांत: पाठ्यक्रम में राष्ट्रीय एकता, शांति, समानता और विश्व बंधुत्व को स्थान देना चाहिए।

उदाहरण: हिंदी के पाठ्यक्रम में पर्यावरण पर निबंध, जल संरक्षण पर कविता और स्वच्छता पर कहानी शामिल करना जीवन से संबंधित पाठ्यक्रम का उदाहरण है।

इकाई–IV : व्याकरण बोध

(क) वर्ण विचार – वर्णमाला, मात्राएँ, उच्चारण स्थान एवं प्राण तत्त्व

हिंदी वर्णमाला चार्ट

स्वर - Vowels

अ अनार	आ आम	इ इमली	ई ईख	उ उल्लू	ऊ ऊन	ऋ ऋषि
ए एकतारा	ऐ ऐनक	ओ ओखली	औ औरत	अं अंगूर	अः नमः	

व्यंजन - Consonants

क कबूतर	ख खरगोश	ग गमला	घ घर	ङ
च चरखा	छ छतरी	ज जलेबी	झ झरना	ञ
ट टमाटर	ठ ठठेरा	ड डमरू	ढ ढकना	ण बाण
त तराजू	थ थन	द दवात	ध धनुष	न नल
प पतंग	फ फव्वारा	ब बतख	भ भालू	म मछली
य यज्ञ	र रस्सी	ल लट्टू	व वकील	श शलगम
	ष षट्कोण	स सरौता	ह हथौड़ी	
	क्ष क्षत्रिय	त्र त्रिशूल	ज्ञ ज्ञानी	श्र श्रमिक

1. वर्ण विचार का अर्थ (Meaning of Varna Vichar)

भाषा की सबसे छोटी ध्वनि, जिसके और छोटे सार्थक ध्वनि-खंड नहीं किए जा सकते, वर्ण कहलाती है। वर्णों के अध्ययन को वर्ण विचार कहते हैं।

उदाहरण: अ, आ, इ, ई, क, ख, ग, घ आदि।

2. वर्णमाला (Hindi Alphabet)

हिंदी भाषा में वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं। वर्ण मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं।

(A) स्वर (Vowels)

जिन वर्णों का उच्चारण बिना किसी दूसरे वर्ण की सहायता से होता है, उन्हें स्वर कहते हैं।

हिंदी के प्रचलित स्वर:

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

इसके अतिरिक्त अं और अः को परंपरागत रूप से अयोगवाह कहा जाता है।

स्वरों के उदाहरण:

स्वर	उदाहरण
अ	अनार
आ	आम
इ	इमली
ई	ईख
उ	उल्लू

ऊ ऊन
ऋ ऋषि
ए एकता
ऐ ऐनक
ओ ओस
औ औरत

स्वरों के प्रकार:

1. ह्रस्व स्वर – जिनके उच्चारण में कम समय लगता है। जैसे: अ, इ, उ, ऋ।
2. दीर्घ स्वर – जिनके उच्चारण में ह्रस्व स्वर की अपेक्षा अधिक समय लगता है। जैसे: आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

(B) व्यंजन (Consonants)

जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है, उन्हें व्यंजन कहते हैं।

हिंदी के व्यंजनों के उदाहरण:

क, ख, ग, घ, ङ

च, छ, ज, झ, ञ

ट, ठ, ड, ढ, ण

त, थ, द, ध, न

प, फ, ब, भ, म

य, र, ल, व

श, ष, स, ह

क्ष, त्र, ज्ञ, श्र (संयुक्त व्यंजन के उदाहरण)।

3. मात्राएँ (Matras)

स्वरों के चिह्नों को मात्राएँ कहते हैं। जब स्वर व्यंजनों के साथ जुड़ते हैं तो उनके मात्रा-चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।

स्वर	मात्रा	क के साथ उदाहरण
अ	कोई मात्रा नहीं	क
आ	◌ा	का
इ	◌ि	कि
ई	◌ी	की
उ	◌ु	कु
ऊ	◌ू	कू
ऋ	◌ृ	कृ
ए	◌े	के
ऐ	◌ै	कै
ओ	◌ो	को
औ	◌ौ	कौ
अं	◌ं	कं
अः	◌ः	कः

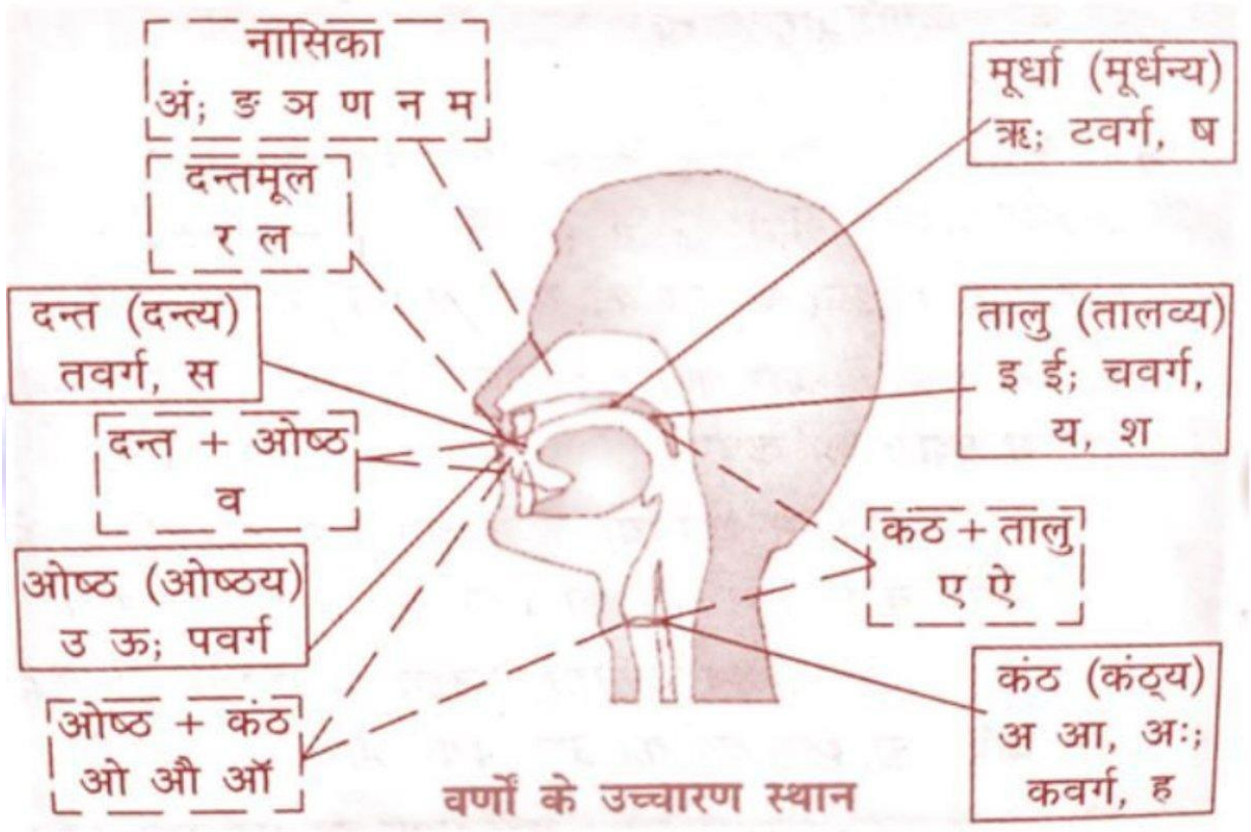
मात्राओं का महत्व:

1. **शब्दों का सही उच्चारण करने में सहायता करती हैं।**
2. **शब्दों का अर्थ स्पष्ट करती हैं।**
3. **शुद्ध लेखन में सहायता करती हैं।**
4. **भाषा को व्यवस्थित बनाती हैं।**

उदाहरण: दिन और दीन में मात्रा के अंतर के कारण अर्थ भी अलग हो जाता है।

4. उच्चारण स्थान (Place of Articulation)

वर्णों का उच्चारण करते समय मुख के जिस भाग से ध्वनि उत्पन्न होती है, उसे उच्चारण स्थान कहते हैं।



उच्चारण स्थान	वर्ण	उदाहरण
कंठ्य	क, ख, ग, घ, ङ	कमल
तालव्य	च, छ, ज, झ, ञ	चम्मच
मूर्धन्य	ट, ठ, ड, ढ, ण	टमाटर
दंत्य	त, थ, द, ध, न	तरबूज
ओष्ठ्य	प, फ, ब, भ, म	पानी

अन्य उच्चारण स्थान:

- **दंतोष्ठ्य – दाँत और होंठ की सहायता से उच्चरित ध्वनियाँ, जैसे व।**
- **कंठतालव्य – ए, ऐ।**
- **कंठोष्ठ्य – ओ, औ।**
- **नासिक्य – नाक से उच्चरित ध्वनियाँ, जैसे ङ, ञ, ण, न, म।**

5. प्राण तत्त्व (Breath/Effort in Pronunciation)

वर्णों के उच्चारण में वायु के प्रवाह की मात्रा के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण प्राण तत्त्व के अंतर्गत किया जाता है।

इसके दो मुख्य प्रकार हैं:

1. अल्पप्राण व्यंजन: जिनके उच्चारण में वायु का कम प्रवाह होता है।

उदाहरण: क, ग, च, ज, ट, ड, त, द, प, ब।

2. महाप्राण व्यंजन: जिनके उच्चारण में वायु का अधिक प्रवाह होता है।

उदाहरण: ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ।

उदाहरण द्वारा अंतर:

- **क – अल्पप्राण**
- **ख – महाप्राण**
- **ग – अल्पप्राण**
- **घ – महाप्राण**
- **प – अल्पप्राण**
- **फ – महाप्राण**

महत्व: प्राण तत्त्व के ज्ञान से विद्यार्थियों को वर्णों का शुद्ध उच्चारण करने में सहायता मिलती है।

(ख) शब्द भेद – अर्थ, उत्पत्ति एवं व्युत्पत्ति के आधार पर, विपरीतार्थक शब्द तथा वाक्यांश के लिए एक शब्द



1. शब्द का अर्थ (Meaning of Word)

वर्णों के ऐसे सार्थक समूह को शब्द कहते हैं, जिससे किसी वस्तु, व्यक्ति, स्थान, गुण या भाव का बोध होता है।

उदाहरण: पुस्तक, विद्यालय, शिक्षक, विद्यार्थी, सुंदर, ईमानदारी।

2. अर्थ के आधार पर शब्दों के भेद

अर्थ के आधार पर शब्दों के मुख्य भेद इस प्रकार समझे जा सकते हैं:

1. सार्थक शब्द: जिन शब्दों का कोई निश्चित अर्थ होता है।

उदाहरण: घर, पानी, विद्यालय, पुस्तक।

2. निरर्थक शब्द: जिनका स्वतंत्र रूप से कोई निश्चित अर्थ नहीं होता।

उदाहरण: चाय-वाय में 'वाय' निरर्थक प्रयोग है।

3. उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के भेद

उत्पत्ति के आधार पर शब्द मुख्य रूप से चार प्रकार के होते हैं।

1. तत्सम शब्द: संस्कृत भाषा से बिना परिवर्तन के हिंदी में आए शब्द।

उदाहरण:

- **अग्नि**
- **सूर्य**
- **रात्रि**
- **दुग्ध**
- **हस्त**

2. तद्भव शब्द: संस्कृत के शब्दों से परिवर्तन होकर बने हिंदी शब्द।

उदाहरण:

तत्सम	तद्भव
अग्नि	आग
दुग्ध	दूध
हस्त	हाथ
दन्त	दाँत
रात्रि	रात
कर्ण	कान
ग्राम	गाँव

3. देशज शब्द: वे शब्द जो स्थानीय बोलियों और देश की लोकभाषाओं से उत्पन्न हुए हैं।

उदाहरण: खटिया, झोला, पगड़ी, लोटा।

4. विदेशी शब्द: वे शब्द जो दूसरी भाषाओं से हिंदी में आए हैं।

उदाहरण:

- **किताब – अरबी**
- **अदालत – अरबी**
- **स्कूल – अंग्रेजी**
- **डॉक्टर – अंग्रेजी**
- **साबुन – पुर्तगाली**

4. व्युत्पत्ति के आधार पर शब्दों के भेद

व्युत्पत्ति के आधार पर शब्दों के तीन मुख्य भेद होते हैं।

1. रूढ़ शब्द: जिन शब्दों के खंड करने पर उनका प्रचलित अर्थ स्पष्ट नहीं होता।

उदाहरण: घर, घोड़ा, पानी, पेड़।

2. यौगिक शब्द: दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बने शब्द।

उदाहरण:

- **विद्यालय = विद्या + आलय**
- **हिमालय = हिम + आलय**
- **राजपुत्र = राजा + पुत्र**
- **रसोईघर = रसोई + घर**

3. योगरूढ़ शब्द: वे यौगिक शब्द जिनका एक विशेष अर्थ प्रचलित हो जाता है।

उदाहरण:

- पंकज = पंक में जन्म लेने वाला, अर्थात कमल।
- दशानन = दस मुख वाला, अर्थात रावण।
- नीलकंठ = नीले कंठ वाला, अर्थात शिव।

5. विपरीतार्थक शब्द (Antonyms)

जिन शब्दों के अर्थ एक-दूसरे के विपरीत होते हैं, उन्हें विपरीतार्थक या विलोम शब्द कहते हैं।

उदाहरण:

शब्द	विपरीतार्थक शब्द
दिन	रात
सुख	दुख
अच्छा	बुरा
अमीर	गरीब
नया	पुराना
सत्य	असत्य
लाभ	हानि
प्रकाश	अंधकार
जीवन	मृत्यु
आशा	निराशा
मित्र	शत्रु
स्वतंत्र	परतंत्र
सफलता	असफलता
ऊँचा	नीचा
प्रेम	घृणा

महत्व:

1. शब्द-भंडार में वृद्धि होती है।
2. भाषा अधिक प्रभावशाली बनती है।
3. लेखन और बोलने की क्षमता विकसित होती है।
4. शब्दों के सही अर्थ समझने में सहायता मिलती है।

6. वाक्यांश के लिए एक शब्द (One Word Substitution)

जब किसी वाक्यांश या शब्द समूह के स्थान पर एक ही शब्द का प्रयोग किया जाता है, तो उसे वाक्यांश के लिए एक शब्द कहते हैं।

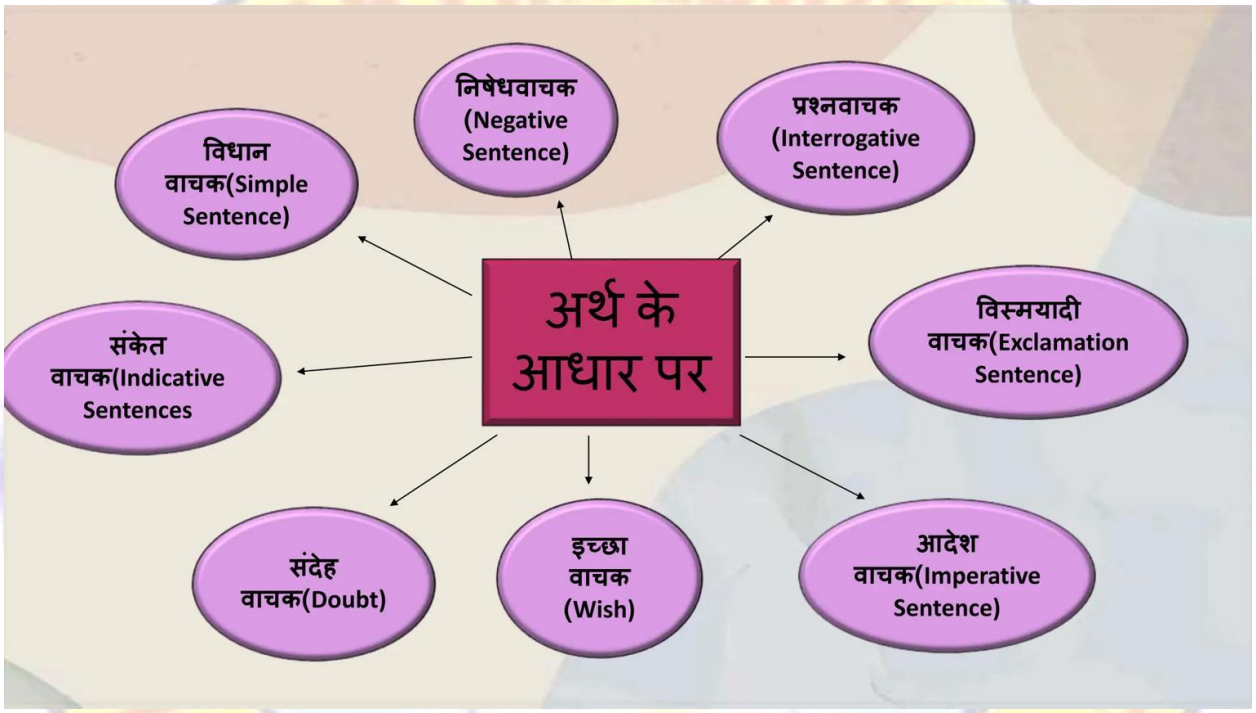
उदाहरण:

वाक्यांश	एक शब्द
जो पढ़ा-लिखा हो	शिक्षित
जो पढ़ा-लिखा न हो	अशिक्षित
जो कभी न मरे	अमर
जो सब कुछ जानता हो	सर्वज्ञ
जो ईश्वर में विश्वास करता हो	आस्तिक
जो ईश्वर में विश्वास न करता हो	नास्तिक
जो दूसरों का भला करे	परोपकारी
जो देश से प्रेम करता हो	देशभक्त
जो सत्य बोलता हो	सत्यवादी
जो कम बोलता हो	मितभाषी
जो बहुत बोलता हो	वाचाल
जो देखने योग्य हो	दर्शनीय
जो क्षमा करने योग्य हो	क्षम्य
जो दूसरों की सहायता करे	सहायक
जो अपने देश में रहता हो	स्वदेशी

वाक्य में प्रयोग:

- **जो कभी नहीं मरता, उसे अमर कहते हैं।**
- **जो दूसरों का भला करता है, उसे परोपकारी कहते हैं।**
- **जो सत्य बोलता है, उसे सत्यवादी कहते हैं।**

(ग) वाक्य – प्रकार, वाक्य परिवर्तन एवं विराम चिह्न



1. वाक्य का अर्थ (Meaning of Sentence)

शब्दों का ऐसा व्यवस्थित समूह जिससे पूर्ण अर्थ प्रकट होता है, वाक्य कहलाता है।

उदाहरण:

- **राम विद्यालय जाता है।**
- **सीता पुस्तक पढ़ती है।**
- **बच्चे मैदान में खेल रहे हैं।**

- भारत हमारा देश है।

2. वाक्य के मुख्य अंग

वाक्य के दो मुख्य अंग होते हैं।

1. उद्देश्य: जिसके बारे में वाक्य में कुछ कहा जाता है।

2. विधेय: उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाता है।

उदाहरण: राम पुस्तक पढ़ता है।

- **उद्देश्य – राम**
- **विधेय – पुस्तक पढ़ता है।**

3. रचना के आधार पर वाक्य के प्रकार

1. सरल वाक्य: जिस वाक्य में एक ही मुख्य क्रिया और एक स्वतंत्र उपवाक्य होता है।

उदाहरण:

- **राम स्कूल जाता है।**
- **मोहन पुस्तक पढ़ता है।**
- **बच्चे खेल रहे हैं।**

2. संयुक्त वाक्य: जिस वाक्य में दो या दो से अधिक स्वतंत्र उपवाक्य समुच्चयबोधक शब्दों से जुड़े होते हैं।

उदाहरण:

- **राम पढ़ता है और श्याम खेलता है।**
- **मैं विद्यालय गया लेकिन शिक्षक नहीं मिले।**
- **सूरज निकला और पक्षी चहचहाने लगे।**

3. मिश्र वाक्य: जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य तथा एक या अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं।

उदाहरण:

- **जो विद्यार्थी मेहनत करता है, वह सफल होता है।**
- **जब वर्षा होती है, तब मौसम सुहावना हो जाता है।**
- **मैं जानता हूँ कि वह ईमानदार है।**

4. अर्थ के आधार पर वाक्य के प्रकार

1. विधानवाचक वाक्य: जिस वाक्य में सामान्य बात कही जाती है।

उदाहरण: भारत एक महान देश है।

2. निषेधवाचक वाक्य: जिसमें किसी काम के न होने का बोध होता है।

उदाहरण: राम आज विद्यालय नहीं गया।

3. प्रश्नवाचक वाक्य: जिसमें कोई प्रश्न पूछा जाता है।

उदाहरण: तुम्हारा नाम क्या है?

4. आज्ञावाचक वाक्य: जिसमें आदेश, अनुरोध या सलाह दी जाती है।

उदाहरण: कृपया बैठ जाइए।

5. इच्छावाचक वाक्य: जिसमें इच्छा, आशीर्वाद या कामना प्रकट होती है।

उदाहरण: भगवान तुम्हें सफलता दे।

6. विस्मयादिबोधक वाक्य: जिसमें आश्चर्य, खुशी या दुख का भाव प्रकट होता है।

उदाहरण: वाह! कितना सुंदर दृश्य है!

7. संदेहवाचक वाक्य: जिसमें संदेह या संभावना का भाव प्रकट होता है।

उदाहरण: शायद आज वर्षा हो।

8. संकेतवाचक वाक्य: जिसमें एक बात दूसरी बात पर निर्भर होती है।

उदाहरण: यदि तुम मेहनत करोगे, तो सफल हो जाओगे।

5. वाक्य परिवर्तन (Transformation of Sentences)

एक वाक्य को उसके अर्थ को यथासंभव सुरक्षित रखते हुए दूसरे रूप में बदलना वाक्य परिवर्तन कहलाता है।

कुछ प्रमुख उदाहरण:

(A) सकारात्मक से नकारात्मक वाक्य

- **सकारात्मक: राम ईमानदार है।**
- **नकारात्मक: राम बेईमान नहीं है।**

(B) विधानवाचक से प्रश्नवाचक

- **विधानवाचक: तुम विद्यालय जाते हो।**
- **प्रश्नवाचक: क्या तुम विद्यालय जाते हो?**

(C) सरल से संयुक्त वाक्य

- **सरल: परिश्रम करने वाला व्यक्ति सफल होता है।**
- **संयुक्त: व्यक्ति परिश्रम करता है और सफल होता है।**

(D) सरल से मिश्र वाक्य

- **सरल: मेहनती व्यक्ति सफल होता है।**
- **मिश्र: जो व्यक्ति मेहनती होता है, वह सफल होता है।**

(E) विस्मयादिबोधक से विधानवाचक

- **विस्मयादिबोधक: वाह! कितना सुंदर फूल है!**
- **विधानवाचक: यह फूल बहुत सुंदर है।**

6. विराम चिह्न (Punctuation Marks)

लिखित भाषा में भावों को स्पष्ट करने तथा पढ़ते समय उचित ठहराव देने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें विराम चिह्न कहते हैं।

विराम चिन्ह

नाम	चिन्ह	नाम	चिन्ह
अल्प विराम	,	लाघव चिन्ह	०
अर्द्ध विराम	;	आदेश चिन्ह	:-
पूर्ण विराम	( ),(.)	रेखांकन चिन्ह	_
उप विराम	:	लोप चिन्ह	.....
विस्मयादिबोधक चिन्ह	!	पुनरुक्ति सूचक चिन्ह	,,
प्रश्न वाचक चिन्ह	?	विस्मरण चिन्ह	( )
कोष्ठक	( )	दीर्घ उच्चारण चिन्ह	(s)
योजक चिन्ह	-	तुल्यता सूचक चिन्ह	(=)
अवतरण चिन्ह या उद्धरण चिन्ह	" "	निर्देशक चिन्ह	(-)

TheSimpleHelp.com

प्रमुख विराम चिह्न एवं उनके उदाहरण:

विराम चिह्न	नाम	उदाहरण
।	पूर्ण विराम	राम घर गया।

,	अल्प विराम	राम, श्याम और मोहन आए।
;	अर्ध विराम	वह आया; लेकिन रुका नहीं।
:	उपविराम	तीन गुण हैं: सत्य, प्रेम और दया।
?	प्रश्नवाचक	तुम कहाँ जा रहे हो?
!	विस्मयादिबोधक	वाह! बहुत सुंदर।
“ ”	उद्धरण चिह्न	उसने कहा, “मैं पढ़ूँगा।”
( )	कोष्ठक	तुलसीदास (महान कवि) थे।
-	योजक चिह्न	माता-पिता
...	लोप चिह्न	वह आया और फिर...

7. विराम चिह्नों का महत्व

1. वाक्य का अर्थ स्पष्ट होता है।
2. पढ़ने में आसानी होती है।
3. भावों को सही ढंग से व्यक्त किया जा सकता है।
4. प्रश्न और उत्तर में अंतर स्पष्ट होता है।
5. भाषा में शुद्धता और सुंदरता आती है।
6. लिखित अभिव्यक्ति प्रभावशाली बनती है।

उदाहरण से समझें:

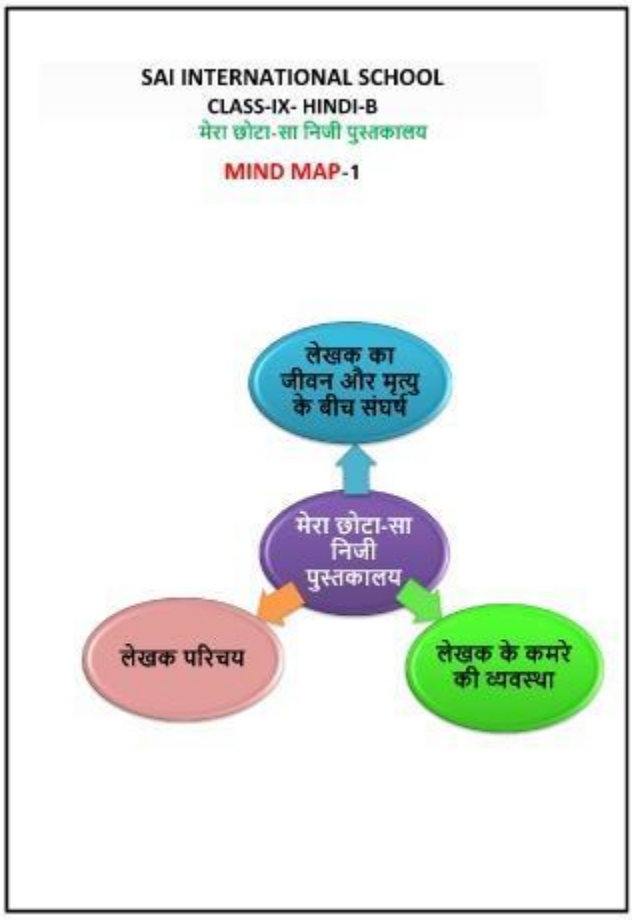
- रोको मत जाने दो।
- रोको, मत जाने दो।

अल्प विराम लगाने से वाक्य के अर्थ और भाव में परिवर्तन हो सकता है।

माइंड मैपिंग (Mind Mapping)

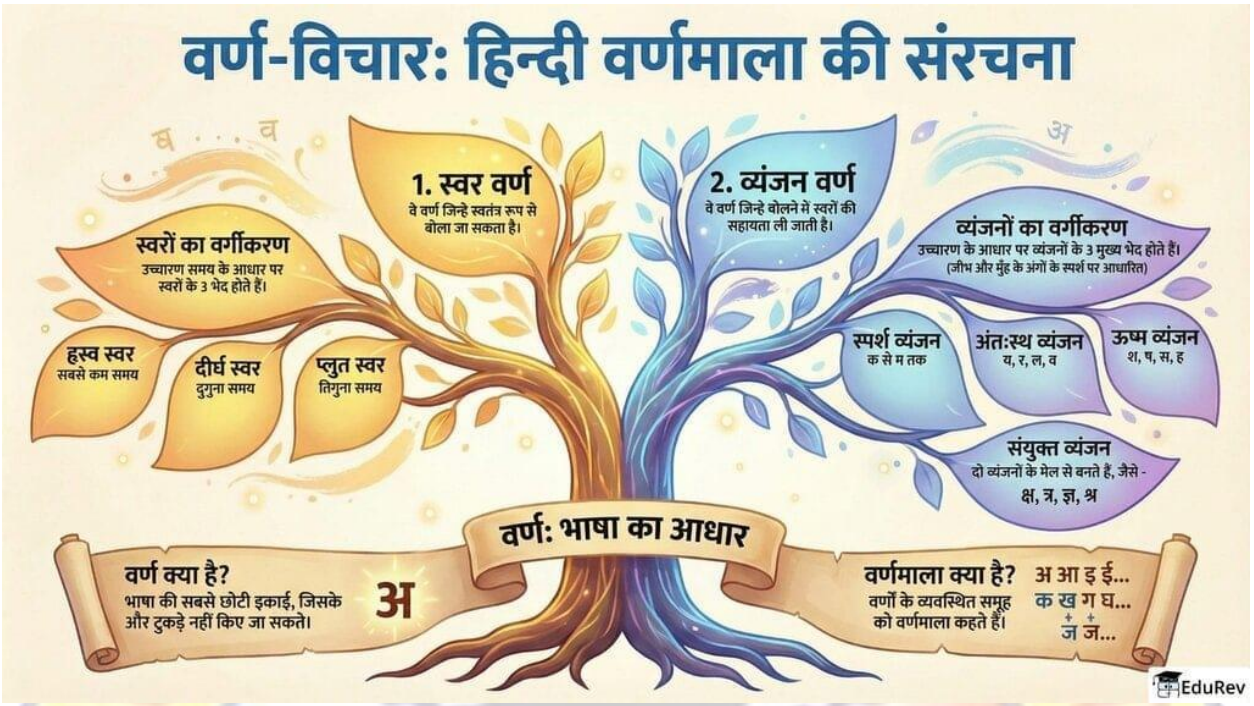
माइंड मैप की सहायता से विद्यार्थी पूरे पाठ्यक्रम को कम समय में याद कर सकते हैं।

माइंड मैप–1 : इकाई–III पुस्तक एवं पाठ्यक्रम



Symbol";}इकाई–III पुस्तक एवं पाठ्यक्रमपाठ्य-पुस्तकभाषा पुस्तकालयपाठ्यक्रममहत्वविशेषताएँसमीक्षाउपयोगिताव्यवस्थापठन रुचिअर्थमहत्वनिर्माण के सिद्धांत

माइंड मैप–2 : इकाई–IV व्याकरण बोध



इकाई–IV व्याकरण बोधवर्ण विचारशब्द भेदवाक्यवर्णमालास्वर एवं व्यंजनमात्राएँउच्चारण स्थानप्राण तत्त्वअर्थ के आधार परउत्पत्ति के आधार परव्युत्पत्ति के आधार परविलोम शब्दएक शब्दवाक्य का अर्थवाक्य के प्रकारवाक्य परिवर्तनविराम चिह्न

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण प्रश्न

क्रम	महत्वपूर्ण प्रश्न
1	पाठ्य-पुस्तक का अर्थ एवं महत्व समझाइए।
2	एक अच्छी पाठ्य-पुस्तक की विशेषताएँ लिखिए।
3	पाठ्य-पुस्तक की समीक्षा कैसे की जाती है?
4	भाषा पुस्तकालय की उपयोगिता एवं व्यवस्था समझाइए।
5	विद्यार्थियों में पठन रुचि विकसित करने के उपाय लिखिए।
6	पाठ्यक्रम का अर्थ, महत्व एवं निर्माण के सिद्धांत समझाइए।
7	वर्णमाला, स्वर एवं व्यंजन का वर्णन कीजिए।

8 उच्चारण स्थान एवं प्राण तत्त्व को उदाहरण सहित समझाइए।

9 उत्पत्ति एवं व्युत्पत्ति के आधार पर शब्दों के भेद बताइए।

10 विपरीतार्थक शब्द एवं वाक्यांश के लिए एक शब्द उदाहरण सहित लिखिए।

11 रचना एवं अर्थ के आधार पर वाक्य के प्रकार समझाइए।

12 वाक्य परिवर्तन तथा विराम चिह्नों का महत्व बताइए।

त्वरित पुनरावृत्ति (Quick Revision)

इकाई–III

- पाठ्य-पुस्तक = ज्ञान + शिक्षण + अभ्यास
- भाषा पुस्तकालय = पुस्तकें + पठन + स्वाध्याय
- पाठ्यक्रम = अर्थ + महत्व + निर्माण के सिद्धांत

इकाई–IV

- वर्ण विचार = स्वर + व्यंजन + मात्राएँ + उच्चारण
- शब्द भेद = अर्थ + उत्पत्ति + व्युत्पत्ति
- विलोम = विपरीत अर्थ वाले शब्द
- एक शब्द = वाक्यांश का संक्षिप्त रूप
- वाक्य = प्रकार + परिवर्तन + विराम चिह्न

B.Ed. परीक्षा के लिए सुझाव: प्रत्येक बड़े प्रश्न का उत्तर लिखते समय सबसे पहले अर्थ एवं परिभाषा, फिर महत्व या विशेषताएँ, उसके बाद प्रकार एवं उदाहरण और अंत में निष्कर्ष लिखें। इससे उत्तर व्यवस्थित और प्रभावशाली बनता है।